अमेरिका–चीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग समझौता

संदर्भ: हाल ही में अमेरिका और चीन ने अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग समझौते (STA) को पांच साल के लिए नवीनीकृत किया है। यह समझौता 27 अगस्त 2024 से प्रभावी हुआ। नवीनीकरण से यह साफ होता है कि दोनों देशों के बीच व्यापार और तकनीकी जैसे क्षेत्रों में तनाव के बावजूद, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग जारी रहेगा।

- इसमें बौद्धिक संपदा अधिकारों और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े उभरते मुद्दों को भी शामिल किया गया है। 1979 में पहली बार हस्ताक्षरित यह समझौता अमेरिका और चीन के बीच विभिन्न वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था।
- शुरुआत में कृषि अनुसंधान पर केंद्रित इस समझौते का दायरा अब बढ़कर कई अनुसंधान क्षेत्रों तक पहुंच गया है, जिससे दोनों देशों के शोधकर्ताओं, विश्वविद्यालयों और संस्थानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहन मिला है।

नए समझौते में किए गए मुख्य बदलाव:

- **मूलभूत अनुसंधान तक सीमित:**
  - » अब सहयोग केवल मूलभूत अनुसंधान तक सीमित रहेगा।
  - » संवेदनशील तकनीकों को सैन्य या रणनीतिक उद्देश्यों में उपयोग से बचाने के लिए उभरती और महत्वपूर्ण तकनीकों को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा।
- **शोधकर्ताओं की सुरक्षा के लिए प्रावधान:**
  - » सहयोगी परियोजनाओं में जुड़े शोधकर्ताओं की सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए गए हैं।
- **डेटा पारदर्शिता और आदान-प्रदान:**
  - » दोनों देशों के बीच डेटा के निष्पक्ष और पारदर्शी आदान-प्रदान को सुनिश्चित करने के लिए नए प्रावधान जोड़े गए हैं।
- **विवाद समाधान तंत्र:**
  - » समझौते में असहमति या उल्लंघन को हल करने के लिए एक तंत्र शामिल किया गया है।
- **समाप्ति प्रावधान:**
  - » यदि किसी पक्ष ने 'खराब नीयत' से कार्य किया, तो परियोजनाओं को रद्द करने का प्रावधान शामिल किया गया है।

यह समझौता अमेरिका और चीन दोनों के लिए कैसे लाभकारी रहा है?

- **अमेरिका के लिए:**
  - » चीन के तेजी से विकसित हो रहे अनुसंधान क्षेत्र तक पहुंच मिली।
  - » कृषि, स्वास्थ्य, और पर्यावरण विज्ञान जैसे क्षेत्रों में संयुक्त शोध को बढ़ावा मिला।
- **चीन के लिए:**
  - » अमेरिकी तकनीक तक पहुंच मिली, जिससे वह वैश्विक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एक अग्रणी शक्ति बना।
  - » शैक्षिक आदान-प्रदान और संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं ने चीन की वैश्विक वैज्ञानिक पहुंच को विस्तारित किया।

भारत के लिए प्रभाव:

- **अनुसंधान और विकास में बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा:**
  - » विज्ञान और प्रौद्योगिकी में चीन की बढ़ती ताकत भारत के लिए बड़ी चुनौती बन सकती है।
  - » भारत को प्रतिस्पर्धी बने रहने और तकनीकी प्रगति बनाए रखने के लिए अनुसंधान और विकास में अधिक निवेश करना होगा।
- **भू-राजनीतिक लाभ:**
  - » अमेरिका और चीन के बीच संबंधों के चलते भारत के अन्य देशों के साथ संबंधों में बदलाव आ सकता है।
  - » इसका असर भारत की वैश्विक राजनीति और साझेदारियों पर पड़ सकता है।
- **रणनीतिक सहयोग का अवसर:**
  - » भारत के मजबूत अनुसंधान और अन्य देशों के साथ समझौतों के चलते, वह अमेरिका और उन देशों के लिए एक अच्छा भागीदार बन सकता है, जो चीन के बजाय भारत के साथ काम करना चाहते हैं।
  - » इससे भारत की वैज्ञानिक साख में सुधार होगा और नई तकनीकों और अनुसंधान अवसरों तक पहुंच मिलेगी।

केन–बेतवा नदी जोड़ो परियोजना

संदर्भ: 25 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के खजुराहो में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना की आधारशिला रखी। इस परियोजना को लागू करने के लिए जल शक्ति मंत्रालय और मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश सरकारों के बीच 22 मार्च 2021 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए थे।

केन–बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के बारे में:

- केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना (KBLP) का उद्देश्य केन नदी से बेतवा नदी तक पानी स्थानांतरित करना है। ये दोनों नदियां यमुना की सहायक नदियां हैं। इस परियोजना के तहत 221 किमी लंबी नहर का निर्माण किया जाएगा, जिसमें 2 किमी लंबी सुरंग भी शामिल है।
- इसका उद्देश्य सिंचाई, पेयजल आपूर्ति, और जलविद्युत व सौर ऊर्जा का उत्पादन करना है। यह परियोजना राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य नदी जोड़ने के माध्यम से क्षेत्रीय जल संकट का समाधान करना है। इसे सूखा-प्रवण क्षेत्रों में जल उपलब्धता बढ़ाने और

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

राज्यों में जल का समान वितरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम माना जा रहा है।

केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के घटक:

- यह परियोजना दो चरणों में विभाजित है:
  - » **चरण-1:** इसमें दौधन बांध, लो और हाई-लेवल सुरंगें, केन-बेतवा लिंक नहर और संबंधित पावर हाउस का निर्माण शामिल है।
  - » **चरण-2:** इसमें लोअर ओर बांध, बिना कॉम्प्लेक्स परियोजना और कोठा बैराज का निर्माण शामिल है।

केन-बेतवा परियोजना के लाभ:

- यह परियोजना बुंदेलखंड क्षेत्र में जल संकट से जूझ रहे उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के हिस्सों को लाभ पहुंचाएगी।
- 10.62 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होगी।
- लगभग 62 लाख लोगों को पीने का पानी मिलेगा।
- 103 मेगावॉट जलविद्युत और 27 मेगावॉट सौर ऊर्जा का उत्पादन होगा।

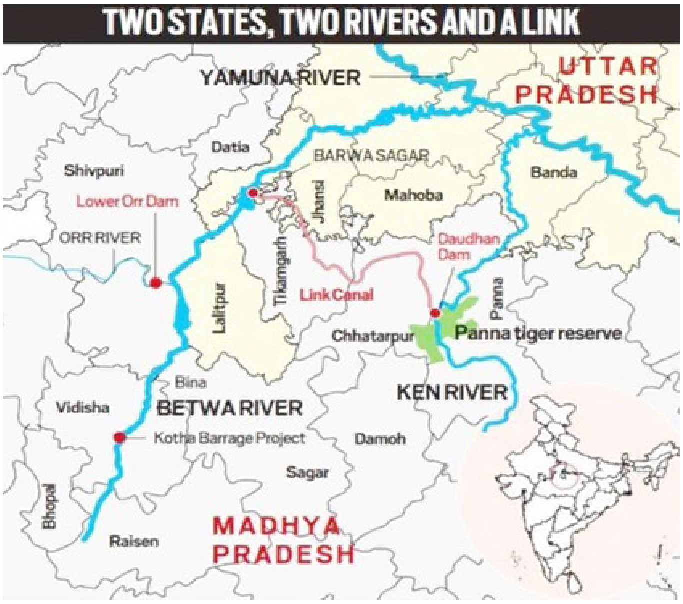

परियोजना से जुड़ी पर्यावरणीय चिंताएं:

- **वनों की कटाई:** दौधन बांध के निर्माण के लिए पन्ना टाइगर रिजर्व में बड़े पैमाने पर वनों की कटाई करनी पड़ेगी, जिससे वन्यजीवों के आवास प्रभावित होंगे।
- **बाघों पर प्रभाव:** परियोजना से पन्ना टाइगर रिजर्व में बाघों की सफल पुन: स्थापना पर नकारात्मक असर पड़ सकता है।
- **घड़ियाल और अन्य प्रजातियों पर प्रभाव:** बांध का निर्माण केन घड़ियाल अभयारण्य में घड़ियालों की आबादी और गिद्धों के घोंसले वाले क्षेत्रों को प्रभावित कर सकता है।
- **भूमि का जलमग्न होना:** बांध से पन्ना नेशनल पार्क के लगभग 98 वर्ग किमी क्षेत्र के जलमग्न होने की संभावना है, जिससे स्थानीय समुदाय प्रभावित होंगे और 6,600 से अधिक परिवार विस्थापित होंगे।

केन-बेतवा परियोजना के सामाजिक प्रभाव:

- इस परियोजना से पन्ना और छतरपुर जिलों के 6,600 से अधिक परिवार विस्थापित होंगे, क्योंकि उनकी जमीन डूब और अधिग्रहण के कारण प्रभावित होगी। इस वजह से स्थानीय समुदायों ने विरोध प्रदर्शन किया है। उनका कहना है कि उन्हें पर्याप्त मुआवजा नहीं मिल रहा है और प्रभावित क्षेत्रों को परियोजना से कोई खास लाभ नहीं होगा।

भारत के स्टार्टअप्स में महिलाओं का बढ़ता प्रभाव

संदर्भ: भारत ने स्टार्टअप क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने में बड़ी प्रगति की है। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, भारत में 73,000 से अधिक स्टार्टअप्स में कम से कम एक महिला निदेशक हैं। यह आंकड़ा स्टार्टअप इंडिया पहल के तहत मान्यता प्राप्त 1,57,000 स्टार्टअप्स का लगभग आधा है। यह उपलब्धि महिलाओं के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है, जो नवाचार को बढ़ावा देकर देश की आर्थिक प्रगति में योगदान दे रही हैं।

महिला उद्यमियों के लिए सरकारी योजनाएं:

भारत सरकार ने महिलाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप्स को समर्थन देने के लिए कई पहल शुरू की हैं। इनमें कुछ प्रमुख कार्यक्रम शामिल हैं:

- **स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS):**
  - » अप्रैल 2021 में शुरू हुई इस योजना के तहत 1,278 महिला-नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को 227.12 करोड़ की फंडिंग स्वीकृत की गई है।
  - » यह योजना शुरुआती चरण के पूंजी प्रदान करके महिला उद्यमियों को उनके व्यवसायों को बढ़ाने और नवीन समाधान विकसित करने में मदद करती है।
- **क्रेडिट गारंटी स्कीम फॉर स्टार्टअप्स (CGSS):**
  - » अप्रैल 2023 में शुरू हुई इस योजना के तहत महिलाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप्स के लिए 24.6 करोड़ के ऋण की गारंटी दी गई है।
  - » यह कार्यक्रम महिला उद्यमियों के लिए वित्तीय सहायता तक पहुंच आसान बनाता है और उन्हें व्यवसाय विस्तार के लिए आवश्यक पूंजी प्राप्त करने में मदद करता है।
- **स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स (FFS):**
  - » इस फंड का 10% हिस्सा महिलाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप्स के लिए आरक्षित है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

  - इसका उद्देश्य महिला-नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना और उनके विकास और नवाचार में मदद करना है।
- इसके अतिरिक्त, 2016 में शुरू किए गए स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम के तहत महिला उद्यमियों को टैक्स में छूट, प्रक्रियाओं को सरल बनाने और फंडिंग सहायता जैसी कई सुविधाएं दी जाती हैं। 2021 में शुरू की गई समृद्ध योजना के तहत 300 सॉफ्टवेयर उत्पाद स्टार्टअप्स के लिए चार वर्षों में 99 करोड़ आवंटित किए गए हैं।

भारत में स्टार्टअप्स के विकास के कारक:

- **तकनीकी प्रगति:** एआई, ब्लॉकचेन, और IoT जैसी तकनीकों का उपयोग स्थानीय और वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए किया जा रहा है।
- **सरकारी समर्थन:** स्टार्टअप इंडिया पहल के तहत टैक्स लाभ, क्षेत्र-विशिष्ट नीतियां, और सरल प्रक्रियाएं स्टार्टअप्स को सफल होने में मदद कर रही हैं।
- **जनसांख्यिकीय लाभ:** युवा कार्यबल और किफायती इंटरनेट की व्यापक पहुंच के चलते बेंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली-एनसीआर जैसे शहर नवाचार केंद्र बन गए हैं।

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:

महिलाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप्स सहित भारतीय स्टार्टअप्स ने अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है:

- **रोजगार सृजन:** स्टार्टअप्स ने देशभर में 16 लाख नौकरियां पैदा की हैं।
- **जीडीपी वृद्धि:** नवाचार और व्यावसायिक गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक वृद्धि में योगदान दिया है।
- **निवेश आकर्षित करना:** भारतीय स्टार्टअप्स लगातार अंतरराष्ट्रीय वीसी और पीई निवेश आकर्षित कर रहे हैं।
- **ग्रामीण विकास:** कई स्टार्टअप्स, विशेष रूप से सामाजिक उद्यम, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में योगदान कर रहे हैं और सकारात्मक सामाजिक बदलाव ला रहे हैं।

मलेरिया मुक्त भारत

संदर्भ: पिछले 75 सालों में भारत ने मलेरिया के खिलाफ बड़ी प्रगति की है। आजादी के समय जहां हर साल 7.5 करोड़ मलेरिया के मामले सामने आते थे, वहीं 2023 में यह संख्या घटकर 20 लाख रह गई है। यह गिरावट भारत के मलेरिया को खत्म करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का लक्ष्य है कि अगले पांच सालों में भारत को मलेरिया मुक्त बना दिया जाए।

मलेरिया से होने वाली मौतों में कमी:

- मलेरिया के मामलों में कमी के साथ ही इससे होने वाली मौतों में भी भारी गिरावट आई है। आजादी के समय हर साल 8 लाख लोग मलेरिया से मरते थे, जबकि 2023 में यह संख्या घटकर केवल 83 रह गई। यह कमी भारत के मलेरिया नियंत्रण के व्यापक प्रयासों की सफलता को दर्शाती है।

सफलता के मुख्य कारण:

- **सरकारी पहल:**
  - भारत की सफलता का मुख्य आधार मजबूत सरकारी प्रयास रहे हैं।
  - 2016-2030 के लिए 'नेशनल फ्रेमवर्क फॉर मलेरिया एलिमिनेशन' और 2017-2022 के लिए 'नेशनल स्ट्रैटेजिक प्लान फॉर मलेरिया एलिमिनेशन' जैसी योजनाएं लागू की गईं।
  - इन योजनाओं में निगरानी को मजबूत करना, बेहतर डायग्नॉस्टिक्स और पूरे देश में इलाज का विस्तार शामिल था।
- **बढ़ा हुआ वित्तीय और अंतरराष्ट्रीय समर्थन:**
  - मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रमों के लिए सरकार ने फंडिंग में काफी इजाफा किया।
  - अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, जैसे 'मलेरिया नो मोर,' ने भारत के मलेरिया उन्मूलन प्रयासों में सहयोग किया।
- **स्वास्थ्य सुविधाओं तक बेहतर पहुंच:**
  - ग्रामीण और जनजातीय इलाकों में बेहतर स्वास्थ्य ढांचा और मोबाइल हेल्थ सेवाओं ने समय पर इलाज और रोकथाम सुनिश्चित की।
  - इससे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में मलेरिया के मामलों में कमी आई।

राज्यों की प्रगति और WHO की भूमिका

- 2023 तक, 24 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने कैटेगरी 1 (1,000 लोगों पर 1 से कम मलेरिया का मामला) हासिल कर ली है। लद्दाख, लक्षद्वीप और पुडुचेरी ने कैटेगरी 0 प्राप्त की है, जहां शून्य स्वदेशी मामले दर्ज किए गए।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

- WHO ने भारत की प्रगति को मान्यता दी है और इसे "हाई बर्डन टू हाई इम्पैक्ट (HBHI)" समूह से बाहर कर दिया है, जो मलेरिया के खिलाफ भारत की लड़ाई में एक बड़ा मील का पत्थर है।

मलेरिया के बारे में जानकारी:

- मलेरिया एक गंभीर बीमारी है, जो प्लाज्मोडियम परजीवी के कारण होती है। यह संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलती है।
- **संक्रमण का तरीका:**
  - मलेरिया एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सीधे नहीं फैलता।
  - यह मच्छरों के काटने से फैलता है।
  - मुख्य परजीवी जो मलेरिया फैलाते हैं, वे प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम और प्लाज्मोडियम विवैक्स हैं।
- **लक्षण:**
  - लक्षण मच्छर के काटने के 10-15 दिन बाद दिखाई देते हैं।
  - इनमें बुखार, सिरदर्द और ठंड लगना शामिल हैं।
  - जिन क्षेत्रों में मलेरिया आम है, वहां आंशिक प्रतिरक्षा वाले लोगों को संक्रमण होने पर कोई लक्षण नहीं दिख सकते।
- **रोकथाम:**
  - मलेरिया को रोकने और इसके प्रसार को कम करने के लिए मच्छर नियंत्रण सबसे जरूरी है।
- **इलाज:**
  - मलेरिया रोकी और ठीक की जा सकने वाली बीमारी है।
  - समय पर निदान और इलाज बीमारी को कम करता है, मौतों को रोकता है, और संक्रमण को फैलने से रोकता है।

पॉवर पैक्ड न्यूज

ऐसेके वलू एके बने टोंगा के नए प्रधानमंत्री

- पूर्व वित्त मंत्री ऐसेके वलू एके को टोंगा का नया प्रधानमंत्री चुना गया है। वह नवंबर 2025 तक इस पद पर रहेंगे। संसद में गुप्त मतदान के माध्यम से उन्हें चुना गया।
- एके ने 2010 में पहली बार संसद में प्रवेश किया और 2014 से 2017 के बीच वित्त मंत्री के रूप में कार्य किया। टोंगा, जिसकी आबादी करीब 105,000 है, एक छोटा दक्षिण प्रशांत द्वीप राष्ट्र है। यहां नवंबर 2025 में अगले आम चुनाव होंगे।

- सियाओसी सोवालेनी, जो 2021 से प्रधानमंत्री थे, ने एके द्वारा पेश किए गए अविश्वास प्रस्ताव का सामना करने से पहले ही इस्तीफा दे दिया। टोंगा ने 2006 में लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शनों के बाद अपने संविधान में बदलाव किया, जिससे प्रधानमंत्री पद के लिए चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता आई।
- एके का चयन ऐसे समय में हुआ है जब देश को राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास की जरूरत है। वित्त मंत्री के रूप में उनके अनुभव और संसद में लंबे कार्यकाल को देखते हुए, उनसे अपेक्षा की जा रही है कि वह टोंगा को स्थायित्व और विकास की दिशा में आगे ले जाएंगे।

पांच राज्यों में नए राज्यपालों की नियुक्ति

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पांच राज्यों में नए राज्यपालों की नियुक्ति की है। अजय कुमार भल्ला, जो भारत के पूर्व गृह सचिव थे, अब मणिपुर के राज्यपाल नियुक्त हुए हैं। मिजोरम के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति को ओडिशा का नया राज्यपाल बनाया गया, जबकि ओडिशा के वर्तमान राज्यपाल रघुबर दास ने इस्तीफा दे दिया।

- पूर्व केंद्रीय मंत्री जनरल विजय कुमार सिंह को मिजोरम का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। वहीं, बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर को केरल का राज्यपाल बनाया गया है। आर्लेकर ने आरिफ मोहम्मद खान का स्थान लिया है, जिन्हें अब बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया गया है।
- यह फेरबदल भारत की संघीय संरचना में राजनीतिक संतुलन और प्रशासनिक कुशलता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से किया गया है। नए राज्यपालों से उम्मीद है कि वे अपने राज्यों में कानून और व्यवस्था बनाए रखने, केंद्र और राज्य सरकार के बीच सहयोग बढ़ाने और विकास कार्यों को गति देने में अहम भूमिका निभाएंगे।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

अरुणिश चावला बने राजस्व सचिव

- अरुणिश चावला को भारत का नया राजस्व सचिव नियुक्त किया गया है। वह बिहार कैडर के आईएएस अधिकारी हैं और इससे पहले फार्मास्युटिकल सचिव के रूप में कार्यरत थे।
- उन्होंने संजय मल्होत्रा का स्थान लिया, जो अब भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर हैं। चावला जुलाई 2028 में सेवानिवृत्त होंगे।
- राजस्व सचिव के रूप में चावला अब जीएसटी परिषद के पदेन सचिव भी रहेंगे। उनकी नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब सरकार को राजस्व संग्रह बढ़ाने और जीएसटी में सुधारों को लागू करने की आवश्यकता है।
- चावला के अनुभव और प्रशासनिक कौशल से कर प्रणाली को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने में मदद मिलेगी।
- फार्मास्युटिकल सचिव के पद पर चावला की जगह अमित अग्रवाल को नियुक्त किया गया है। अमित अग्रवाल वर्तमान में भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।
- उनकी नियुक्ति से उम्मीद है कि वह स्वास्थ्य और औषधि क्षेत्र में नई योजनाओं और नीतियों को गति देंगे।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का निधन

- पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर 2024 की रात्रि निधन हो गया। वे 92 साल के थे। मनमोहन सिंह, 2004 में देश के 14वें प्रधानमंत्री बने थे। वे देश के पहले सिख और सबसे लंबे समय तक रहने वाले चौथे प्रधानमंत्री थे।

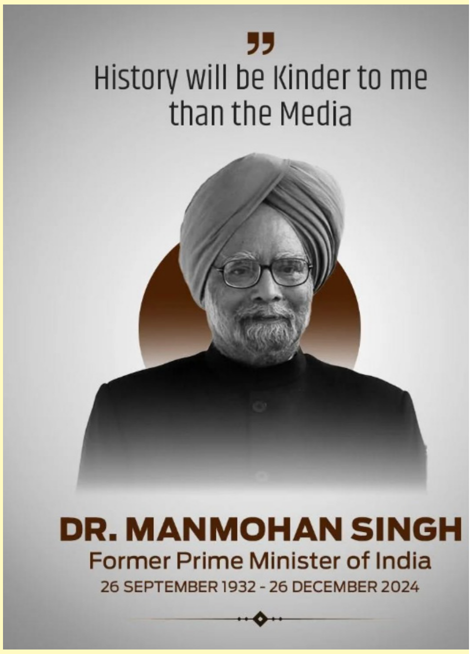

- डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर, 1932 को अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के गांव गाह, पश्चिम पंजाब में हुआ। 1954 में पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर और 1957 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में अर्थशास्त्र में ट्राइपोस प्राप्त किया। 1962 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.फिल की उपाधि से सम्मानित किया।
- डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने करियर की शुरुआत पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में वरिष्ठ व्याख्याता के रूप में की और बाद में वहीं अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बने। 1969 में वे दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रोफेसर बने। इसके बाद उन्होंने 1971 में विदेश व्यापार मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार का पद संभाला। वे 1982 से 1985 तक भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर भी रहे।
- डॉ. मनमोहन सिंह 1991-1996 तक भारत के वित्त मंत्री थे, तब उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए बड़े कदम उठाए। उन्होंने रुपये का अवमूल्यन किया, करों को कम किया और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया। इन सुधारों से भारत की कमजोर अर्थव्यवस्था मजबूत बन गई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चुनाव जीतने के बाद डॉ. मनमोहन सिंह को 2004 में प्रधानमंत्री चुना गया। उनकी सरकार ने समावेशी विकास, गरीबी घटाने और आर्थिक विस्तार पर ध्यान दिया। उनके कार्यकाल में भारत की औसत जीडीपी वृद्धि दर 7.7% रही।
- डॉ. सिंह को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले, जिनमें 1987 में पद्म विभूषण और 1993 में यूरो मनी अवार्ड प्रमुख हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029